नोटः इस समाचार को प्राथमिकता से प्रकाि ात करावें। यह आज का मुख्य कार्यक्रम था।

संस्कारों का निर्माण करती है जैन विद्याः आचार्यश्री महाश्रमण

जैन विद्या दीक्षांत समारोह में विद्यार्थियों को नवाजा, प्र ाास्ति पत्र और मैडल प्रदान किए

केलवाः 1 अक्टूबर

तेरापंथ धर्मसंघ के 11वें अधि ाास्ता आचार्यश्री महाश्रमण ने कहा कि जैन विद्या संस्कारों के निर्माण में एक महत्वपूर्ण कडी है। आज के परिवे ा में इसकी आव यकता भी है। युवा पीढी हमारे संस्कारों से विमुख न हो। इसके लिए जैन विद्या की ि ाक्षा देने की आव यकता है।

आचार्यश्री ने उक्त विचार यहां तेरापंथ समवसरण में जैन वि व भारती लाडनूं के ि ाक्षा विभाग समण संस्कृति संकाय की ओर से आयोजित जैन विद्या दीक्षांत समारोह में उपस्थित विद्यार्थियों और श्रावक समाज को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने ज्ञान को जीवन में आलोक बिखेरने वाला बताते हुए कहा कि आदमी में ज्ञान की परिणति होनी चाहिए। हमारे आचार भाुद्ध और निर्मल बने रहे। इसकी आज के परिवे ा में महत्ती आव यकता है। जैन विद्या समस्याओं और दुर्गनों से मुक्ति की ि ाक्षा है। आज अनेक विद्यार्थियों ने विज्ञ की उपाधि ग्रहण की। आगे इस बात पर ध्यान देने की आव यकता है कि वे जैन समाज में उपासक–उपासिका बनने की दि ाा में प्रयास करे। इससे भी आगे वक्ता और प्रवक्ता बनने का सुअवसर है। ज्ञान की गंगा तो भारीर में बह ही रही है। थोडा ओर प्रयास करें और जैन विद्या के सर्वव्यापीकरण की दि ाा कार्य करें।

आचार्यश्री ने कहा कि जैन विद्या की परीक्षाओं में एक बात की ओर घ्यान देने की आव यकता है कि अच्छे अंक प्राप्त करने की लालसा में कोई परीक्षार्थी अनुचित साधनों का प्रयोग न करें। नकल करने की प्रवृति हमें पीछे की ओर

धकेलती है। इसके प्रभावी नियंत्रण के लिए परीक्षार्थियों से इस तरह का संकल्प पत्र भरवाने की आव यकता है।

विवि का समारोह याद आ गया

आचार्यश्री ने कहा कि दीक्षांत समारोह की सादगी और गरिमा देखकर उन्हें वि ववि्यालय स्तर पर आयोजित होने वाले दीक्षांत समारोह की याद आ गई। जिस तरह से विवि स्तर पर होने वाले समारोह में एक के बाद एक विद्यार्थी को मैडल और प्र ास्ति पत्र प्रदान किया जाता है ठीक उसी तरह से यहां भी ऐसा ही हो रहा है।

सक्रियता से काम कर रहे मुनि जयंत

आचार्यश्री ने कहा कि समण संस्कृति संकाय के सह प्रभारी मुनि जयंतकुमार बडी सक्रियता से अपनी जिम्मेदारी का निर्वाह कर रहे है। इसमें व्यापक बढोतरी की अपेक्षा है। वे समण संस्कृति के परिचायक बन गए है। आगे भी इसी तरह से उन्हें बढचढकर कार्य करने की आव यकता है।

वि व भाांति के विशय समाहित

संकाय के सहप्रभारी मुनि जयंतकुमार ने कहा कि जैन विद्या में वि व भाांति के विशय समाहित है। इसकी सफलता में कार्यकर्ता की सजगता महत्वपूर्ण है। हमारे ज्ञानार्थी भी एक सफल कडी के रुप में कार्य कर रहे है। यह मॅल्यता को समझकर और इसकी अर्हता अर्जित कर संस्कारों से परिपूर्ण होते है। आज अनेक ज्ञानार्थी आधुनिक संस्कृति से ओतप्रोत इस जिन्दगी में संस्कारों का ज्ञान अर्जित कर रहे है। यह बहुत बडी बात है। उन्होंने कहा कि जीवन व्यवहार में व्यापकता के योगदान के साथ मन में यकीन, चाहत और संकल्प पैदा करने की आव यकता है। श्रम, संयम और चिंतन की आव यकता है। संकाय के निदे ाक पन्नालाल पुगलिया ने बताया कि दीक्षांत समारोह में जैन विद्या का 9 वर्शीय पाठ्यक्रम पूर्ण करने वाले दे ाभर के 141 विद्यार्थियों को विज्ञ की उपाधि प्रदान की गई। साथ ही प्रत्येक वर्श में अखिल भारतीय स्तर पर प्रथम, द्वितीय और तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों को स्वर्ण पदक प्रदान किए गए। उन्होंने बताया कि विभिन्न विशयों में दे ाभर में अव्वल रहे 68 विद्यार्थियों को समारोह के दौरान सम्मानित किया गया। उन्होंने संकाय का

प्रतिवेदन प्रस्तुत करते हुए बताया कि 33 वर्श की यात्रा पूरी कर चुके इस संकाय के माध्यम से अब तक कई प्रतिभाओं को सम्मानित किया जा चुका है। विद्यार्थियों को पुरस्कार विभागाधिपति रतनलाल चोपडा, निदे ाक पुगलिया, प्रायोजक मालचंद बेंगानी, जैन वि व भारती के सह मंत्री अरविंद गोटी ने प्रदान किए। व्यवस्था समिति के अध्यक्ष महेन्द्र कोठारी व आंचलिक संयोजक रमे ा मूथा ने स्वागत भाशण दिया। इस दौरान जैन विद्या कार्य ाला भाग तीन के परिणाम की प्रति और संकाय संस्कृति संकाय बुलेटिन को आचार्यश्री को भेंट किया गया। इस अवसर पर चैन्नई ज्ञान ाला की प्र ाक्षिकाओं ने गीतिका के माध्यम से अपनी भावाभिव्यक्ति प्रस्तुत की। संयोजन अ ोक डूंगरवाल और श्रीमती सरिता सुराणा ने किया।

आत्मानु ाासन का प्रयास आव यकः आचार्यश्री महाश्रमण

केलवा में चातुर्मास, अणुव्रत उद्बोधन सप्ताह के तहत मनाया अनु ाासन दिवस, आज अहिंसा दिवस के साथ होगा समापन

केलवाः 1 अक्टूबर

तेरापंथ धर्मसंघ के 11 वें अधि ाास्ता आचार्यश्री महाश्रमण ने कहा कि व्यक्ति स्वयं का द ान करने का प्रयास करता है वह अहिंसा को साध सकता है। मनुश्य इस तथ्य पर चिंतन करने का प्रयास करें कि भले ही उसकी और दूसरों की देह में भिन्नता है, लेकिन आत्मा का स्वरुप एक ही है। मुझे स्वयं और दूसरों के सुख का समान दृश्टि से देखने की आव यकता है। इससे आत्मानु ाासन की अनुभूति होगी। आचार्यश्री ने उक्त विचार यहां तेरापंथ समवसरण में चल रहे चातुर्मास के दौरान मनाए जा रहे अणुव्रत उद्बोधन सप्ताह के अन्तर्गत भानिवार को अनु ाासन दिवस पर उपस्थित श्रावक समाज को संबोधित करते हुए व्यक्त किए।

उन्होंने व्यक्ति से स्वयं पर स्वयं का अनु ाासन करने का आह्वान करते हुए कहा कि अणुव्रत बुराईयों का दमन करने का बेहतर उपाय है। व्यक्ति को जीवन में बुराईयों का समूल दमन करने के लिए संयम के मार्ग पर चलने की आव यकता है। तेरापंथ धर्मसंघ में अणुव्रत के एक गीत का प्रायः संगान किया जाता है कि अपने का अपने से अनु ाासन हो। इसका अभिप्रायः यह है कि पहले स्वयं के द्वारा स्वयं पर अनु ाासन करने का प्रयास करो। यदि कोई प्रमाद करने का प्रयास करता है तो उसे दण्ड देने

की कार्रवाई अव य हो अन्यथा उसका अनुसरण कोई दूसरा व्यक्ति भी करेगा और संगठन व संघ में अनु ाासन का कोई स्थान नहीं रह सकेगा। तेरापंथ धर्म संघ में अनु ाासनहीनता करने वालों के विरूद्ध कडी कार्रवाई करने का प्रावधान है। आचार्यश्री भिक्षु और आचार्यश्री जयाचार्य के काल को कठोर अनु ाासन का समय भी माना जाता है। उन्होंने कहा कि जिस संगठन से जुडकर व्यक्ति हमे ाा त्रुटियों का अनुसरण करता रहता है। उसका परिश्कार करने की प्रक्रिया भी आव यक है। इसके लिए अनु ाासन भी जरूरी है। निज पर भाासन फिर अनु ाासन के सूत्र को आज के परिवे ा में अपनाने की आव यकता है। जो अच्छा ि ाश्य होता है वह अच्छा गुरु भी बन सकता है और जिसमें अच्छे ि ाश्य के लक्षण नहीं है। उससे अच्छे गुरु की कल्पना करना व्यर्थ है। गुरु को अधिकार है कि वह अपने ि ाश्य को किसी भी तरह की गल्ती पर उलाहना दे सकता है। तेरापंथ जैन धर्म संघ में युवाचार्य का कार्यकाल प्रि ाक्षण का समय होता है। गुरु के साथ रहकर वह इतना निपुण हो जाता है कि गुरु बनने के बाद उसे किसी तरह की परे ाानी नहीं आती। वह संघ को अच्छे ढंग से चला सकता है। उन्होंने कहा कि भारत एक लोकतांत्रिक दे ा है। किसी भी जनतांत्रिक भाासन की सफलता अनु ाासन और संयम पर निर्भर है। आज स्कूलों और ज्ञान ाालाओं में संस्कार दिए जाते है। इसमें ओर अधिक व्यापकता की आव यकता है। इससे आने वाली पीढी संस्कारों से ओतप्रोत होगी।

उन्होंने कहा कि किसी दूसरे के अधीन रहकर उसके आदे ाों की पालना करना कठिन है, लेकिन जो व्यक्ति इन कठिनाईयों से सामना कर लेता है वह जीवन में कभी असफल नहीं होता। आज तेरापंथ के अनेक साधु विदे ाों में बैठे है। वे दूर रहकर भी एक ही आचार्य के निर्दे ाों की पालना कर रहे है। सब एक ही डोर में बंधे हुए है। अनु ाासनहीनता के कारण यदि एक भी कट गया तो वह कहां जाकर गिरेगा। इसका अंदाजा लगाया जाना मु कल है। जीवन संयम और अनु ाासन की डोर से बंधा रहे तो हमारा समुचित विकास हो सकता है।

अनु ाासन में रहना ही सभ्यता

मंत्री मुनि सुमेरमल ने कहा कि अनु ाासन और विकास एक दूसरे से जुडे हुए है। अनु ाासन है तो विकास स्वतः ही हो जाता है और इसका अभाव है तो विकास के पहिए थम जाते है। अनु ाासन हर प्रक्रिया में आव यक है। ऋतुओं में भी देखा जाता है कि जब तक यह संयमित रहती है वातावरण अच्छा बना रहता है और किसी ने छेडछाड कर दी कि प्रलयकारी स्थिति बन जाती है। व्यक्ति में अनु ाासन है तो

समझों सबकुछ आ गया। इससे चारित्र का विकास होता है और मन और इंन्द्रियों पर नियंत्रण बना रहता है। अणुव्रत कहता है कि अनु ाासन में व्यक्ति लाइन में चलने वाला हो जाता है। वह सभ्य, ि ाश्टता के उपक्रम से जीवन का निर्वाह करता है। अनु ाासन भंग करना उपयोगी नहीं रहता। इस अवसर पर मुनि उदितकुमार ने भी विचार व्यक्त किए। अणुव्रत उद्‌बोधन सप्ताह का समापन रविवार को अहिंसा दिवस मनाने के साथ होगा। संयोजन मुनि मोहजीतकुमार ने किया।